अढ़ाई द्वीप

(जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश भाग ३ से आधारित)

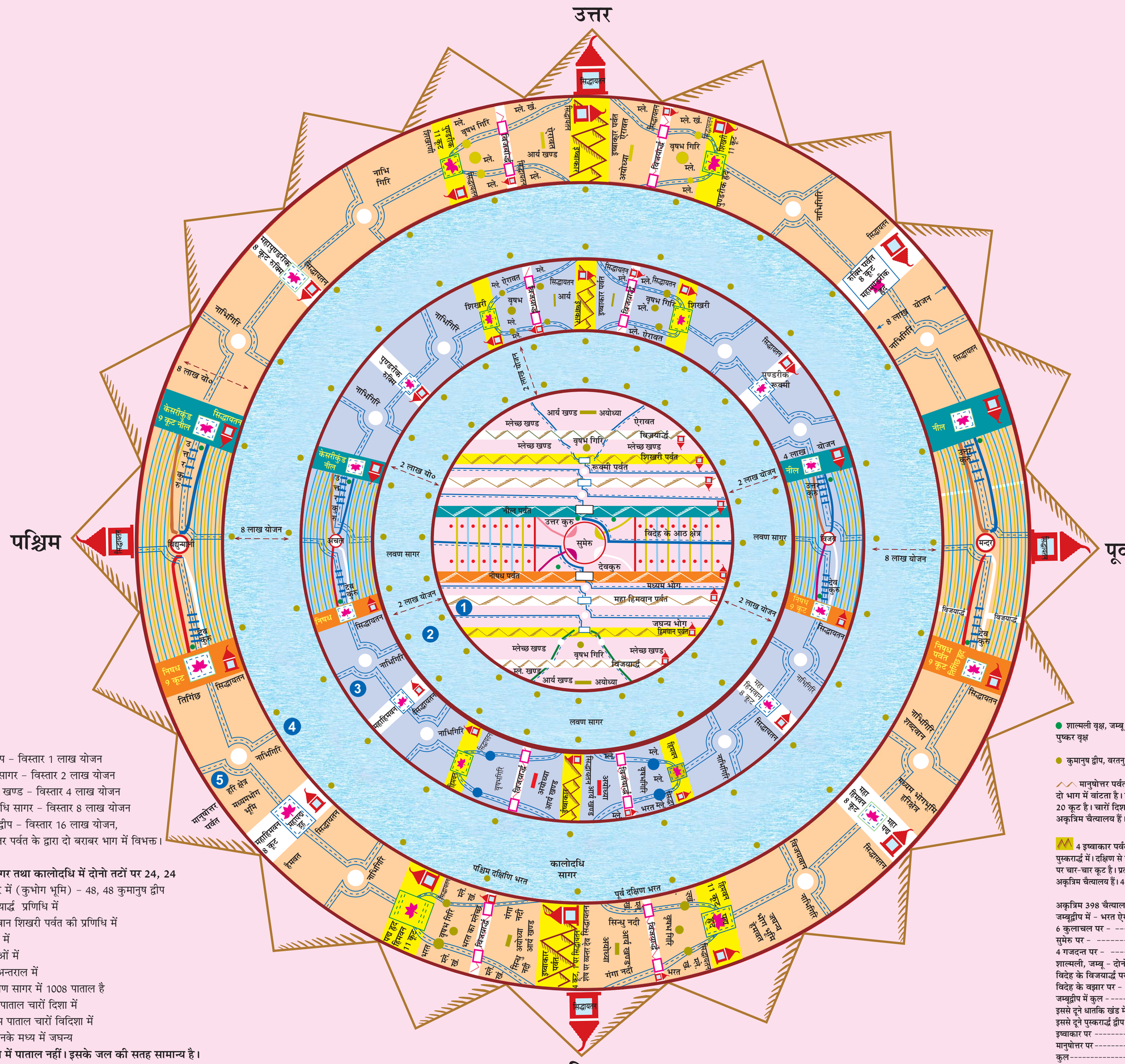

1. जम्बूद्वीप - विस्तार 1 लाख योजन
2. लवण सागर - विस्तार 2 लाख योजन
3. धातकी खण्ड - विस्तार 4 लाख योजन
4. कालोदधि सागर - विस्तार 8 लाख योजन
5. पुष्कर द्वीप - विस्तार 16 लाख योजन, मानुषोत्तर पर्वत के द्वारा दो बराबर भाग में विभक्त।

लवण सागर तथा कालोदधि में दोनो तटों पर 24, 24
दोनो सागर में (कुभोग भूमि) - 48, 48 कुमानुष द्वीप
4+4 विजयार्द्ध प्रणिधि में
4+4 हिमवान शिखरी पर्वत की प्रणिधि में
8 दिशाओं में
8 विदिशाओं में
16 दोनों अन्तराल में
केवल लवण सागर में 1008 पाताल है
4 - ज्येष्ठ पाताल चारों दिशा में
4 - मध्यम पाताल चारों विदिशा में
1000 - इनके मध्य में जघन्य
कालोदधि में पाताल नहीं। इसके जल की सतह सामान्य है।

- शाल्मली वृक्ष, जम्बू वृक्ष, धातकी वृक्ष और पुष्कर वृक्ष
- कुमानुष द्वीप, वरतनु प्रभास और मागध द्वीप

मानुषोत्तर पर्वत जो कि पुष्कर द्वीप को दो भाग में वांटता है। कुण्डला कार है। इस पर 20 कूट है। चारों दिशाओं में 1-1 करके 4 अकृत्रिम चैत्यालय हैं। चार कूट पर।

4 इष्वाकार पर्वत - 2 धातकी खंड, 2 पुस्कार्द्ध में। दक्षिण से उत्तर दिशा में। इन प्रत्येक पर चार-चार कूट है। प्रत्येक पर्वत पर एक-एक अकृत्रिम चैत्यालय हैं। 4 पर्वत पर 4 चैत्यालय हैं।

अकृत्रिम 398 चैत्यालय अढ़ाई द्वीप में
जम्बूद्वीप में - भरत ऐरावत विजयार्द्ध - --2
6 कुलाचल पर - ----------6
सुमेरु पर - ----------16
4 गजदन्त पर - ----------4
शाल्मली, जम्बू - दोनो वृक्ष पर -------2
विदेह के विजयार्द्ध पर - ----------32
विदेह के वझार पर - ----------16
जम्बूद्वीप में कुल - ----------78
इससे दूने धातकि खंड में----------156
इससे दूने पुस्कार्द्ध द्वीप में ----------156
इष्वाकार पर ----------4
मानुषोत्तर पर ----------4
कुल----------398

—— अढ़ाई द्वीप ——

जम्बू द्वीप, लवण समुद्र, धातकी खंड, कालोदधि समुद्र और पुष्कर द्वीप का आधा भाग मनुष्य क्षेत्र कहलाता है। मनुष्य उतने ही क्षेत्र में पाये जाते हैं। पुष्कर द्वीप के मध्य भाग में वलय के आकार का मानुषोत्तर पर्वत स्थित है। जो इस द्वीप को दो भागों में बाँटता है। मनुष्य इसको पार नहीं कर सकता। इसलिये अढ़ाई द्वीप और दो समुद्र तक के क्षेत्र को मनुष्यलोक कहते हैं। इसका बिस्तार 45 लाख योजन है।

मनुष्य लोक का 45 लाख योजन विस्तार कैसे —

जम्बू द्वीप का 1 लाख यो०, 2 लाख यो० चारों ओर जम्बू द्वीप के (चुड़ी के आकारवत) अथवा पूर्व पश्चिम में चारों ओर लवण सागर यानि 4 लाख यो०, 4 लाख यो० चारों तरफ धातकी खंड यानि 8 लाख यो०, 8 लाख यो० चारों तरफ कालोदधि यानि 16 लाख यो०, 8 लाख यो० पुष्करार्द्ध द्वीप यानि 16 लाख यो० = 1+4+8+16+16+=45 लाख यो० अत: 45 लाख यो० की सिद्ध शिला हुई।

अढ़ाई द्वीप में क्या-क्या कितने-कितने —

(1) 5 मेरु -- सुदर्शन मेरु जम्बूद्वीप के मध्य में, उसी प्रकार धातकी खंड, और पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व पश्चिम भाग में बीचों-बीच एक-एक मेरु है। पूर्व धातकी खंड में विजय, पश्चिम धातकी में अचल। पूर्व पुष्करार्द्ध में मंदर तथा पश्चिम पुष्करार्द्ध में विद्युन्माली, (2) 4 ईष्वाकार पर्वत उत्तर से दक्षिण फैले हैं 2 धातकी खंड को दो पुष्करार्द्ध को 2-2 भागों में बाँटता है सभी पर 4-4 कूट एक-एक पर सिद्धायतन बाकि पर व्यन्तर देव। (3) 5 महाविदेह - एक जम्बू द्वीप में, 2 धातकी खंड में, 2 पुष्करार्द्ध में (4) 5 भरत क्षेत्र - एक जम्बू द्वीप में, 2 धातकी खंड में, 2 पुष्करार्द्ध में (5) 5 ऐरावत क्षेत्र - एक जम्बू द्वीप में, 2 धातकी खंड में, 2 पुष्करार्द्ध में (6) 30 कुलाचल - 6 जम्बू द्वीप में, 12 धातकी खंड में, 12 पुष्करार्द्ध में (7) 20 नाभिगिरि - 4 जम्बू द्वीप में, 8 धातकी खंड में, 8 पुष्करार्द्ध में (मध्यम व जघन्य भूमियों में हैं) (8) 35 क्षेत्र - 7 जम्बू द्वीप में, 14 धातकी खंड में, 14 पुष्करार्द्ध में (9) 10 उत्तम भोग भूमि - 2 जम्बू द्वीप में, 4 धातकी खंड में, 4 पुष्करार्द्ध में (देवकुरु, उत्तरकुरु सभी विदेहों में) (10) 10 मध्यम भोग भूमि - 2 जम्बू द्वीप में, 4 धातकी खंड में, 4 पुष्करार्द्ध में (हरि एवम् रम्यक नाम से) (11) 10 जघन्य भोग भूमि - 2 जम्बू द्वीप में, 4 धातकी खंड में, 4 पुष्करार्द्ध में (हैमवत व हैरण्यवत) (12) 70 मुख्य नदियाँ - 14 जम्बू द्वीप में, 28 धातकी खंड में, 28 पुष्करार्द्ध में (13) 20 गजदन्त - 4 जम्बू द्वीप में, 8 धातकी खंड में, 8 पुष्करार्द्ध में (प्रत्येक महा विदेह के बीच में) (14) 170 विजयार्द्ध - 34 जम्बू द्वीप में, 68 धातकी खंड में, 68 पुष्करार्द्ध में (भरत, ऐरावत तथा विदेह के 32 क्षेत्र में एक-एक) (15) 170 आर्य खण्ड - 34 जम्बू द्वीप में, 68 धातकी खंड में, 68 पुष्करार्द्ध में (16) 10 अनादि निधन वृक्ष पृथिवी कायिक - 2 जम्बू द्वीप में, 4 धातकी खंड में, 4 पुष्करार्द्ध में (जम्बू, शाल्मली, धातकी पुष्कर नाम से) (17) 850 म्लेछ खंड - 170 जम्बू द्वीप में, 340 धातकी खंड में, 340 पुष्करार्द्ध में (18) 80 द्रह (तालाब) - 16 जम्बू द्वीप में, 32 धातकी खंड में, 32 पुष्करार्द्ध में (19) 130 द्रह (दूसरी मान्यता) - 26 जम्बू द्वीप में, 52 धातकी खंड में, 52 पुष्करार्द्ध में (20) 20 यमक गिरि - 4 जम्बू द्वीप में, 8 धातकी खंड में, 8 पुष्करार्द्ध में (21) 40 दिग्गजेन्द्र - 8 जम्बू द्वीप में 16 धातकी खंड में - 16 पुष्करार्द्ध में (विदेह के बीच में) (22) 1000 कांचनगिरि - 200 जम्बू द्वीप में, 400 धातकी खंड में, 400 पुष्करार्द्ध में (द्रहों के दोनों वगल), (23) 170 वृषम्गिरि - 34 जम्बू द्वीप में, 68 धातकी खंड में, 68 पुष्करार्द्ध में (प्रत्येक भरत व ऐरावत तथा प्रत्येक विदेह के हर क्षेत्र में एक एक) (24) 80 वक्षारगिरि - 16 जम्बू द्वीप में, 32 धातकी खंड में, 32 पुष्करार्द्ध में (विदेह को विभाजित करनेवाले) (25) 60 विभंगा नदी व कुंड - 12 जम्बू द्वीप में, 24 धातकी खंड में, 24 पुष्करार्द्ध में (विदेह को विभाजित करनेवाले) (26) 80 रक्तोदा नदी एवम् कुंड - 16 जम्बू द्वीप में, 32 धातकी खंड में, 32 पुष्करार्द्ध में (विदेह के 8 क्षेत्रों को 6 भागों में बाँटती है), 80 गंगा नदी एवम् कुंड, 80 सिन्धु नदी एवम् कुंड (27) 170 तमिस्र गुफा - 34 जम्बू द्वीप में, 68 धातकी खंड में, 68 पुष्करार्द्ध में (विजयार्द्ध पर्वत में जिससे होकर सिन्धु व रक्तोदा निकलती है), 170 खंड प्रपात गुफा - 34 जम्बू द्वीप में, 68 धातकी खंड में, 68 पुष्करार्द्ध में (विजयार्द्ध पर्वत में जिससे होकर गंगा व रक्ता निकलती है) (28) 18750 विद्याधर के नगर - 3750 जम्बू द्वीप में, 7500 धातकी खंड में, 7500 पुष्करार्द्ध में (भरत एवम् ऐरावत के प्रत्येक विजयार्द्ध पर 115 तथा विदेह के प्रत्येक विजयार्द्ध पर 110) (29) 2840 कूट सभी पर्वतों पर - 568 जम्बू द्वीप में, 1136 धातकी खंड में, 1136 पुष्करार्द्ध में (30) वन अनेक जैसे भद्रसाल, नन्दन, सौमनस, पाडुंक, देवारण्य, भूतारण्य। सभी पर्वतों के शिखरों पर उनके मूल में नदियों के दोनों पार्श्वभाग में आदि (31) चैत्यालय अनेक-कुण्ड, वन समूह, नदियाँ, देव नगरियां, पर्वत, तोरण द्वार, द्रह, वृक्ष 10 आर्य खण्ड के तथा विद्याधरों के नगर आदि सब पर चैत्यालय है (32) वेदियों अनेक जम्बूद्वीप आदि क्षेत्रों की सभी द्रहों की कुण्डों की, सर्व पर्वतों की महानदी आदि की (33) कुण्ड जितनी मुख्य नदी परिवार नदी आदि जितनी भी है उतने ही (34) कमल - प्रत्येक द्रह में 140116 हैं द्रह 80 भी है दूसरी मान्यता से 130 भी है (35) 170 कर्मभूमि 34 जम्बूद्वीप में 68 धातकी खंड में 68 पुष्करार्द्ध द्वीप में (36) 96 कुभोगभूमि - 24-24 लवण सागर व कालोदधि सागर के दोनों तटों पर (कुमानुष द्वीप) (37) 1008 - पाताल - लवण सागर में (38) 170-170-170 मागध वरतनु प्रभास देव द्वीप (जम्बूद्वीप में 34-34 धातकी खंड में 68-68 पुष्करार्द्ध में भी 68-68) (39) मनुष्य लोक के अन्त में मानुषोत्तर पर्वत जिसमें 20 कूट तथा चारों दिशाओं में चार कूट पर सिद्धायतन वाकि में व्यंतर देवों का निवास (40) लवण सागर में 16 सूर्य द्वीप 32 चन्द्र द्वीप (इन्हें कोई आचार्य मानते हैं कोई नहीं) (41) 20 त्रिभुवन चूड़ामणि वाले जिनभवन - (4 जम्बूद्वीप, 8 धातकी खंड, 8 पुस्कार्द्ध के विदेहो के बिच में)

नोट - पर्वत के नाम, अवस्थान, इनपर अवस्थित कूटों के प्रमाण एवम् नाम आदि में अन्तर।

प्रिन्टिंग की भूल अथवा ज्ञान के क्षयोपशम की कमी से जो कुछ भूल हो विद्वत जन उसे सुधार कर पढ़े –

क्षमा प्रार्थी **ललिता जैन-शंभु लाल जैन**, (चौरंगी दिगम्बर जैन मन्दिर, कोलकाता)
ओम नेत्र अपार्टमेंट, तीन तल्ला, 48 पेरी मोहन राय रोड, चेतला, कोलकाता-27, होआटसअैप +91 9830963621, मो० +91 9674337147
चित्रांकित करने में सहयोगी : **संजय-श्वेता जैन, शरद-पूजा जैन** एवं **ड० विश्वनाथ-मधु दुदानी**

आर्ट प्रिंटिंग हाउस, 43ए, अब्दुल हालीम लेन, कोलकाता 700 016 द्वारा मुद्रित।